



॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य-प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र)

वर्ष-1, अंक-1, मास अगस्त 2021	विक्रमी संवत् 2078,	दयानन्दाब्द 198	सृष्टि संवत् 1,96,08,53,122
एक प्रति 5 रूपये	वार्षिक शुल्क 50/- रूपये		आजीवन 500/- रूपये
सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री	www.aryasamajrajandernagar.org		दूरभाष:- 011-40224701

नये संकल्पों एवं उत्साहवर्द्धक योजनाओं के साथ मनायें श्रावणी पर्व

□ स्वामी आर्यवेश

(श्रावणी पर्व को आर्यजन अत्यन्त उत्साह के साथ मनाते हैं। लेकिन इस वर्ष कोरोना संक्रमण के इस वातावरण में अपनी सुरक्षा तथा औरों की सुरक्षा एवं सरकार द्वारा निर्देशित नियमों को ध्यान में रखते हुए इस पर्व को मनायें। श्रावणी पर्व आर्य समाज का मुख्य पर्व है, इसको धूमधाम से मनाने की आवश्यकता है जिससे आर्यों में उत्साह का जागरण हो सके।)

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्त्व रखते हैं। वेदों की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र का निर्माण होता है तथा वेदों का जीवनदर्शन ही आज के जीवन तथा जगत् को सत्य, धर्म, न्याय, सुख, शांति और सच्चा आनन्द दे सकता है। इस वर्ष 22 अगस्त, 2021 रविवार को श्रावणी पर्व तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 30 अगस्त, 2021 सोमवार को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर रक्षाबन्धन का त्यौहार भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है जिसमें प्रत्येक भाई अपनी बहनों की रक्षा का संकल्प लेता है। इसी प्रकार यज्ञोपवीत

धारण करते समय भी संकल्प लिये जाते हैं। देखा जाये तो श्रावणी पर्व संकल्पों को धारण करने का पर्व है। इस बार का श्रावणी पर्व हम कुछ विशेष संकल्प लेकर मनायें। हम अपनी वैदिक संस्कृति को बचाने, सुरक्षित रखने, आगे बढ़ाने के लिए निम्नलिखित तीन संकल्प लेकर इस पर्व को उत्साहपूर्वक ढंग से मनायें।

1. गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का संवर्द्धन करते हुए गुरुकुलों को सशक्त एवं सबल बनाना तथा सुन्दर व्यवस्था के साथ सुव्यवस्थित एवं आकर्षक बनाने में योगदान देना।

2. संस्कृत भाषा को कम से कम 10वीं कक्षा तक अनिवार्य भाषा के रूप में लागू करवाने का प्रयास करना।

3. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वेदभाष्य को समस्त विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करवाने का प्रयास करना।

इस बार के श्रावणी पर्व को जहाँ हम पारम्परिक ढंग से उत्साह पूर्वक मनायें वहीं उपर्युक्त संकल्पों को पूर्ण करवाने के लिए दृढ़ संकल्पित हों और पूरी निष्ठा के साथ इस कार्य को पूर्ण करने के लिए संगठित होकर अग्रसर हों। इसके लिए यह आवश्यक है कि गुरुकुलों के सभी स्नातक, योगी, हित चिन्तक एवं आचार्यगण श्रावणी के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र के गुरुकुलों या

प्रमुख आर्य समाजों में एकत्रित होकर उपरोक्त महत्त्वपूर्ण संकल्प सामूहिक रूप से लें और उसे क्रियान्वित करने के लिए ठोस योजना बनायें।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनो में अपने उद्देश्य व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर

अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर, वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके समालोचना अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियाँ सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिए जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि जातिवाद, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, नारी उत्पीड़न के ऊपर सभी आर्य समाजों में गंभीर चर्चा होनी चाहिए और इस पर कार्य योजना भी बनानी चाहिए। अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त जो वंचित, शोषित जन हमसे दूर हुए और अलग-थलग पड़े लोग हैं उनको साथ मिलाने की आज बहुत आवश्यकता है। हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन उन बस्तियों में भी जाकर यज्ञ करें तथा सहभोज का आयोजन करें जहाँ इस प्रकार के लोग निवास करते हैं। जात-पात उन्मूलन की आवश्यकता सबसे अधिक है और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर ही हमें चलना चाहिए। वंचित, शोषित व उपेक्षित वर्ग को जोड़ना इस श्रावणी पर्व पर विशेष अभियान

की तरह चलाया जाना चाहिए। उपेक्षित वर्ग को आर्य समाज में आमंत्रित करके तथा उनका सम्मान करके भी हम जात-पात पर निर्णायक प्रहार कर सकते हैं। इस कार्य से देश में हो रहे धर्मान्तरण के कुचक्र को भी रोकने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि धर्मान्तरण की अधिकतम कार्यवाही समाज के इन वंचित और उपेक्षित वर्गों के भाई-बहनों पर ही की जाती है।

एक सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है कि ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं। हमें अपने कार्यों से चरित्र से, व्यवहार से, अपने पास-पड़ोस के लोगों पर विशेष छाप छोड़नी चाहिए और इसके लिए अपने पास-पड़ोस और गली-मोहल्ले के लोगों के घरों में दुःख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा। उनकी सहायता करनी होगी। उनके पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में अ पनी उपस्थिति दर्ज कराकर यथाशक्ति सहयोग प्रदान करना चाहिए। लोगों से मेल-मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे और जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम उन तक अपनी बात पहुँचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का व्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी

युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक अनारोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सदमन्तव्यों के प्रति रूचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान भी किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

इस श्रावणी पर्व पर हम सब आर्यों को संकल्प लेना चाहिए कि ईमानदारी व कर्मठता से हम आर्य समाज का कार्य करेंगे तथा सक्रिय होकर आगे आयेंगे एवं नये जोश के साथ जन-जागरण का कार्य प्रारम्भ करेंगे।

सम्पादकीय

□ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

इस मास में श्रावणी तथा जन्माष्टमी जैसे महत्वपूर्ण पर्व आयों द्वारा सोत्साह मनाये जायेंगे। श्रावणी का सम्बन्ध वेदों के स्वाध्याय तथा जन्माष्टमी योगेश्वर श्रीकृष्ण के पावन जीवन से सम्बद्ध है। आर्य जाति का स्वत्व वेद और प्रेरणास्रोत वैदिक मर्यादाओं के पालन कर्ता श्रीकृष्ण जैसे महामानवों के जीवन पर आधृत है। सदियों से आर्यजाति अपने इन पूर्व पुरुषों पुण्यपुरुषों से प्रेरणा प्राप्त कर अनुप्राणित होती रही है। कालक्रम में विकृतियाँ भी आती रहीं हैं। वर्तमान में एक बहुत बड़ा जन जनसमुदाय वेद तथा वैदिक विचार धारा से दूर होकर विकृति का पात्र बन गया है और वैदिक मर्यादाओं के संवाहक राम तथा श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों के पावन जीवन में सांस्कृतिक विकृति उत्पन्न कर, उसी का उपासक होकर रह गया है। महाभारत काल के पश्चात् रचित पौराणिक साहित्य ने इस विकृत सांस्कृतिक विस्तार को प्रचुर प्रोत्साहन प्रदान किया है। ऋषि दयानन्द ऐसे प्रथम महापुरुष हैं जिन्होंने अपने ऊर्जस्वी व्यक्तित्व से इस अन्धविश्वास को विध्वस्त करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। अपने जीवन काल में ही उन्होंने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहरा कर इस विकृति का साहसिक विरोध किया तथा आर्य सन्तानों को वैदिक मान्यताओं की ओर, ऋषि-मुनियों की निष्पाप, विश्वकल्याणकारी जीवन शैली की ओर चलने की प्रेरणा प्रदान की। आज आर्य जाति की दुर्दशा का एक मात्र कारण वेद मार्ग से उसका भटक जाना है। ऋषि दयानन्द ने श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों के जीवन से जुड़ी प्रत्येक विकृति को अस्वीकार कर उन्हें वैदिक परम्पराओं से सुसंस्कृत महामानव का सम्मान दिया। उन्होंने धार्मिक सामाजिक, राजनीतिक, मर्यादाओं के लिए ही नहीं अपितु समस्त कर्तव्य कर्म में शुचिता के लिए वेदों को प्रमाण माना और उसी के अनुसार जीवन यापन की प्रेरणा प्रदान की। श्रावणी पर्व का सम्बन्ध वेद तथा वैदिक वाङ्मय के स्वाध्याय से जुड़ा है।

वेद का स्वाध्याय और तदनुरूप जीवन निर्माण ही मनुष्य का परम धर्म है। इस सम्बन्ध में ऋषि का कहना है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आयों का परम धर्म है। यह वाक्य प्रत्येक आर्य के लिए विशेष रूप से विचारणीय है। आज यदि आर्य श्रीकृष्ण जैसे तेजस्वी बनने का संकल्प लें, वैदिकी मर्यादा में उस तेज को धारण करें, पाखण्ड, अन्याय, अत्याचार के नाश के लिए श्रीकृष्ण की तरह दृढ़ता से संकल्प सिद्ध होकर सामने आए तो आसुरी वातावरण निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा। दुर्भाग्य यही है कि आज हम महापुरुषों का नाम लेते हैं पर उनके गुणों को धारण करने में हमारी रूचि नहीं होती। हम उस सुदर्शन चक्रधारी, असुरगण विनाशक, वेद विद्या निष्णात श्रीकृष्ण जैसे तेजस्वी बनकर विश्व को सुख-समृद्धि की ओर लायें। छोटा सा दीपक अपने तेज से अपार अन्धकार को समाप्त कर प्रकाश कर देता है। जिसमें तेज होता है वही बलवान होता है। योगी भर्तृहरि के शब्दों में "तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु कः प्रत्ययः"।

परमात्मा आर्य जाति को तेजस्वी बनायें हमसे अपने दिव्य तेज का आधान करें। "तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।"

जिएँ सौ वर्ष की जिंदगी

□ ललिता कुमार

क्या आज भी प्राचीन काल की तरह सौ वर्ष तक स्वस्थ और निरोगी जीवन जिया जा सकता है? हां, यदि संयमपूर्वक जीवन जिया जाये तो मनुष्य सौ वर्ष की जिन्दगी प्राप्त कर सकता है। रूस के समाचार पत्र में दीर्घायु से संबंधित एक घटना का विवरण प्रकाशित हुआ था जिसमें एक दंपति के बारे में कहा गया कि एक सौ बीस वर्ष की आयु पूरी कर रहे हैं।

इसी प्रकार एक 118 वर्षीय दंपति का विवरण फ्रांस के समाचारों में छपा था। अभी सबसे अधिक दीर्घजीवियों की संख्या जापान में है। भारत भूमि पर ही हिमालय की कन्दराओं और गुफाओं में आज भी बहुत से साधु संन्यासी मिल जाएंगे जो सौ वर्ष से अधिक की जिन्दगी जी रहे हैं।

दीर्घजीवन के सूत्र- 'भोजन को आधा करो, पानी को करो दुगुना।' परिश्रम को तीन गुणा करो, हंसने को करो चार गुणा। यह है लंबी जिन्दगी का राज। जिन्हें लंबी उम्र जीना हो तो इस उक्ति को अपने में लागू कर प्राप्त कर सकते हैं।

दीर्घायु होने के 8 नुस्खे-

1. प्राणायाम, 2. परिश्रम, 3. सादा जीवन, 4. सादा भोजन, 5. ब्रह्मचर्य, 6. उपवास, 7. अक्रोध, 8. विश्राम।

विशेषज्ञों का कहना है कि लंबी आयु का संबंध वहां के वातावरण से भी हो सकता है, जहां की जलवायु में प्रदूषण न हो। पास में बहने वाली नदी स्वच्छ जल लेकर आती हो और मौसम एक समान बना रहता हो। प्रकृति के अनुकूल आहार-विहार से भी लंबी आयु प्राप्त की जा सकती है।

शतायु की आकांक्षा रखने वाले को यह बात गांठ में बांध लेनी चाहिए कि जिन्हें लंबी जिन्दगी जीनी हो, वे सादा जीवनक्रम अपनायें। भौतिकता के आकर्षण से दूर रहें, सामर्थ्य भर श्रम करें, सात्विक भोजन ग्रहण करें और मानसिक उद्विग्नता, चिन्ता, भय क्लेश आदि से दूर रहें।

मानवता का लंगर

किसी जरूरतमंद की सेवा से मिलता है सुख और संतोष

कोरोना के इस दौर में राजेन्द्र नगर स्थित आर्य समाज में 250 से 300 लोगों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था चल रही है। आर्यसमाज में प्रतिदिन लंगर लगता है। इस लंगर में कोरोना गाइडलाइन का पालन करते हुए खाना परोसा जाता है।

ईश्वर की रहमत सब पर बरसे, दो वक्त की रोटी के लिए कोई न तरसे

किसी निर्धन की भूख मिटाना ही सबसे बड़ा परोपकार है। इसी सेवाभाव को रखते हुए सम्मानीय श्री एस.के. अजमानी एवं आर्य समाज के प्रतिष्ठित अधिकारियों द्वारा ऋषि लंगर की शुरुआत हुई। यह लंगर प्रतिदिन दोपहर 12.00 बजे से 2.00 बजे तक अनवरत रूप से चलता है। ईश्वर की कृपा से इस लंगर में कोई भूखा नहीं जाता। इसी अनुकम्पा से सभी आर्य समाज के सदस्य सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

वैदिक संस्कृति का केन्द्र: आर्य समाज राजेन्द्र नगर

युग युगान्तर से चली आ रही भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को पूर्ण स्वच्छ रूप से प्रवाहित करने के उद्देश्य से ही आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा आर्ष ब्रह्मचारी वैदिक छात्रावास का संचालन पिछले पांच वर्षों से अनवरत गति से संचालित किया जा रहा है। यहाँ सम्पूर्ण भारत के गुरुकुलों से अधीत छात्रों को विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय आदि में अध्ययन करने के लिए आर्य समाज राजेन्द्र नगर आवास तथा भोजन व्यवस्था उपलब्ध कराता है। इन बी.ए., एम.ए., बी.एड. के विद्यार्थियों को वैदिक वाङ्मय, आध्यात्मिक, ज्ञान, विज्ञान, श्रुति, शास्त्र, इतिहास एवं नेतृत्व, कर्तव्य शक्ति का ज्ञान होता है। ये विद्यार्थी गुरुकुलीय दिनचर्या एवं आचरण अपने जीवन में अपना रहे हैं एवं पालन कर रहे हैं। इन्हीं विद्यार्थियों में से कल कोई विद्यार्थी स्वामी दयानन्द श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी बनकर भारत माता का भाल ऊँचा करेगा। भवनों के निर्माण से भी बढ़कर भावनाओं के केन्द्र व्यक्ति के निर्माण का कार्य महत्वपूर्ण होता है अतः आर्य समाज राजेन्द्र नगर का सात्विक भावना से भरपूर सभ्य युवकों का निर्माण एवं सहयोग वन्दनीय कार्य है। आइये, इस महान एवं पुनीत कार्य में हम सहयोगी बने तथा संस्कृति के यज्ञकुण्ड आर्थिक आहुति देकर इसे प्रचण्ड करें।

- नरेन्द्र मोहन वलेचा, मन्त्री

राजनेताओं की दृष्टि में ऋषि दयानन्द

1. अगर आर्यसमाज न होता तो भारत की क्या दशा हुई होती, इसकी कल्पना करना भी भयावह है। आर्यसमाज का जिस समय काम करना शुरु किया था, कांग्रेस का कहीं पता भी नहीं था। स्वराज्य का प्रथम उद्घोष स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही किया। यह आर्य समाज ही था, जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी हुई गाड़ी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया। अगर आर्य समाज न होता तो भारत-भारत न होता।

-अटल बिहारी वाजपेयी

2. "महर्षि दयानन्द स्वराज्यप्रेरक, समाज सुधारक तथा हिन्दीभाषा के प्रेमप्रचारक थे। उन्होंने अस्पृश्यता के कलंक को धोने का प्रयत्न किया। ऐसे सब कार्यों के लिए महर्षि का स्मरण चिरस्थायी रहेगा।"

-म. मोहनदास गांधी

3. ऋषि ने गहरी निद्रा में सोए हुए भारत को जाग्रत किया है। वे 'स्वराज्य' के सर्वप्रथम सन्देशवाह तथा मानवता के उपासक थे।

- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

हम तुम्हें कभी भूला ना पायेंगे

कोरोना महामारी में छोड़कर चले गए आत्मीयजनों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि आप सब वर्तमान परिस्थितियों की निष्ठुरता का सामना कर रहे हैं। ये परिस्थितियां केवल निष्ठुर ही नहीं डराने वाली भी हैं। कोरोना का जो भयानक रूप हम सभी देख रहे हैं उसकी कल्पना मात्र से ही व्यक्ति की कंपकपी छूट जाती है। इस महामारी के कारण बहुत सारे आत्मीयजन हमें छोड़कर चले गए हैं। किसी के बच्चे गये, किसी के पति चले गए, किसी का पिता, किसी के भाई-बहन और कोई अपने छोटे बच्चों को विलखता छोड़ गया है। बहुत से परिवार में तो कई-कई लोग एक साथ चले गए। आर्य समाज महिला आश्रम आदि के साथ तथा मेरी निजी संबंध जिनके साथ रहा है उनको याद करता हूँ तथा विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। पूज्यनीय माता कृष्ण आहुजा जिनका जीवन उत्साह प्रसन्नता सद्भाव यज्ञ प्रेमी साधुभाव परोपकार ईश्वर भक्ति से परिपूर्ण था एक लम्बा पवित्र जीवन जीकर गयी। माता जी को विनम्र-विनम्र श्रद्धांजलि।

आर्य स्त्री समाज (बहावलपुर) राजेन्द्र नगर के धर्माचार्य आचार्य अनिल शास्त्री जी का जाना आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। महान आत्मा को शत्-शत् नमन।

श्री ओ.पी. नरूला जी आर्य समाज के बहुत ही शुभ चिन्तक व सहयोगी थे। बहुत ही मिलनसार व्यवहार कुशल इंसान थे।

परमात्मा अमृतमयी गोद में स्थान दें माता सुदर्शन राय जी जनकचुघ जी सत्यपाल ग्रोवर जी, श्रीमती गुलशन मल्होत्रा जी ज्ञानप्रकाश आर्य पुष्पा आहुजा सुरेन्द्र आहुजा जी हरीश आहुजा श्रीमती सुदर्शना मैहतानी, श्रीमती सुरेन्द्र वर्मा, श्री वासुदेव कक्कड़, श्री सी.एल. वर्मा, श्रीमती उर्मिला कालरा, श्री अंकुर भाटिया। परमात्मा से प्रार्थना है कि सभी पवित्र आत्माओं को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दें। - अशोक सहगल, प्रधान

कैसे बनेगा बच्चों का उज्ज्वल भविष्य?

□ नीरज यादव, एटा

आजकल अधिकांशतया बच्चे बाहर खेल-खेलने के बजाए घर में बैठकर टी.वी. देखना अथवा वीडियो गेम खेलना ज्यादा पसंद करते हैं। दोस्तों के साथ घर से बाहर आना-जाना, घूमना-फिरना, बोलना-चालना, गप्प-शप भी आधुनिक परिस्थितियों के हिसाब से कुछ कम ही होता जा रहा है। बच्चों के सबसे ज्यादा शुभचिंतक अभिभावकगण भी इस बात से ज्यादा खुश दिखते हैं कि उनके बच्चे बाहर खेलने से बचे हुए हैं क्योंकि छोटी-छोटी बातों पर कई बार बड़ी-बड़ी दिल दहलाने वाली घटनाएं घट जाती हैं। बच्चे बाहर जाएंगे तो कुरीति, कुविचार, कुसंग, कुकर्म और कहीं न कहीं से झंझट ही मोल लेंगे। इसलिए अगर घर के आंगन में ही रहें तो अच्छा है। चाहे घर में टी.वी. देखें या कोई गेम खेलें अथवा कुछ भी करें, पर घर में ही रहें।

कई बार आपने अभिभावकों को यह गर्व से कहते सुना होगा कि हमारे बच्चे घर से बाहर नहीं निकलते। हमें अगर किसी काम से कहीं बाहर भी जाना पड़े तो बच्चे कहते हैं कि बाहर लॉक लगाकर चले जाइए, हम तो अन्दर ही टी.वी. देख रहे हैं। फिर चाहे हम चार-छः या आठ घण्टे में वापिस लौटकर आएँ, लेकिन बच्चे घर में आराम से सोए या कोई गेम, टी.वी. देखते, खेलते मिलते हैं। हमारे मन को बड़ा संतोष मिलता है यह देखकर कि हमारे बच्चे बाहर की गंदगी से बचे हुए हैं। कुछ लोग तो बच्चों के घर में दुबके रहने की परिपाटी को देखकर उन्हें अन्तर्मुखी तक समझ लेते हैं।

वैसे घर से ज्यादा बाहर रहना भी बुरी बात है। लेकिन स्कूल और ट्यूशन के अलावा केवल टी.वी. या गेम्स से चिपके

रहना तो बहुत खतरनाक है। अमेरिकन जर्नल ऑफ पेडियाट्रिक्स में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार अत्यधिक टी.वी. देखना, अथवा वीडियो गेम खेलना बच्चों में एकाग्रता सम्बन्धी समस्याएं पैदा करता है। इससे भी ज्यादा भयावह बात तो यह है कि ये समस्याएं केवल बचपन पर ही असरदार सिद्ध नहीं होती, बल्कि किशोर तथा युवा अवस्था तक पीछा करती हैं। इस खास अध्ययन के मुताबिक टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम को देखते समय किसी भी दृश्य की आवश्यकता के अनुसार फोकस बार-बार बदलता रहता है और इससे बच्चों के किसी एक चीज में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे बच्चे उन कार्यों एवं चीजों पर अपना ध्यान ज्यादा देर तक एकाग्र करने में असमर्थ हो जाते हैं जिनमें कोई विशेष आकर्षण या बेहद ध्यान खींचने वाली क्षमता न हो। जो बच्चे दिन भर टी.वी. से, या वीडियो गेम्स से जुड़े रहते हैं उनकी रूचि ऐसे कामों में कम ही लगती है, जिनमें उन्हें मजा नहीं आता, जैसे होमवर्क, कोई सारगर्भित

कहानी सुनना, कोई कोर्स की पोयम, गीत, संगीत याद करना आदि। इन सब रचनात्मक कार्यों में उन्हें बोरियत महसूस होने लगती है। वीडियो गेम की बात करें तो आजकल कोई भी मोबाइल फोन हो उसमें कम्पनी की तरफ से गेम उपहार में मिलते हैं। क्योंकि उन्हें समाज की नब्ब का पता है, कि किस चीज से व्यक्ति, व्यक्ति का परिवार और बच्चे प्रभावित होते हैं।

इस विषय में एक मनोचिकित्सक अरूणा ब्रूटा का कथन है कि ज्यादा टी.वी. के शौकीन बच्चों की भावनाएं कुंद हो जाती हैं। ऐसे में वे किताबें, समाचार पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने से परहेज करने लगते हैं। आमतौर पर वीडियो गेम खेलने से बच्चों की एकाग्रता बढ़ने की उम्मीद का अनुमान लगाया जाता है। लेकिन आधा घंटा से ज्यादा गेम खेलने पर उल्टा बुरा असर पड़ सकता है। एकाग्रता की समस्याएं (अटेंशन डिफिसिट हाईपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) से बच्चों में खराब स्कूली रिजल्ट और आक्रामक व्यवहार जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

आर्य प्रेरणा के सभी सुधी पाठकों को रक्षाबन्धन, श्रावणी, स्वाधीनता दिवस एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

आओ! मिलकर संकल्प करें आर्य प्रेरणा पत्रिका घर-घर तक पहुंचानी है।

आइए! सब मिलकर फैलाएं वर्षा की बूदें

शीतल, मलय पूरे विश्व में

वेदरूपी ज्ञान की खुशियों से भर दे

सबका आंचल, महक उठे जीवन बगिया

हर व्यक्ति, संकल्प करे, मुझे आर्य प्रेरणा को कम-से-कम दस सदस्यों तक पहुंचाना है।

Medicinal Smoke (Hawan) Reduces Airborne Bacteria

□ Satish Kumar

From time immemorial, human beings have used smoke of medicinal plants for curing disorders. Smoke produced from natural substances has been used extensively in many cultures and famous ancient physicians have described and recommended such use. Under the continuous Saraswati - Indus civilization going back to 7500 BC (i.e.-9500 Before Present (BP) the great rishis (saints) used to perform agnihotra-yagnas to purify the environment as described in Rigveda-the most ancient compilation of knowledge on earth by sublimating the Havana samagri (mixture of wood and odoriferous and medicinal herbs) in the fire accompanied by the chanting of Vedic mantras described in Rigveda- the most ancient compilation of knowledge on earth.

The study represents a comprehensive analysis and scientific validation of our ancient knowledge about the effect of ethno pharmacological aspects of natural products smoke for therapy and health care on airborne bacterial composition and dynamics, using the Biology microplate panels and Micrology database. In this study, we have designed an air sampler for microbiological air sampling during the treatment of the room with medicinal smoke. In addition, elimination of the aerial pathogenic bacteria due to the smoke is reported too. We have observed that the treatment of medicinal smoke emanation by burning wood and a mixture of odoriferous and medicinal herbs (havan

samagri=material used in oblation to fire all over India) on aerial bacterial population caused over 94% reduction of bacterial counts by 60 min and the ability of the smoke to purify or disinfect the air and to make the environment cleaner was maintained up to 24 h in the closed room. Absence of pathogenic bacteria *Corynebacterium urealyticum*, *Curtobacterium flaccumfaciens*, *Enterobacter aerogenes* (*Klebsiella mobilis*), *Kocuria rosea*, *Pseudomonas syringae pv. persicae*, *Staphylococcus lentus* and *Xanthomonas campestris pv. tardierescens* in the open room even after 30 days is indicative of the bactericidal potential of the medicinal smoke treatment. We have demonstrated that using medicinal smoke it is possible to completely eliminate diverse plant and human pathogenic bacteria of the air within confined space.

Work has implications to use the smoke generated by burning wood and a mixture of odoriferous and medicinal herbs, within confined spaces such as animal barns and seed/grain warehouses to disinfect the air and to make the environment cleaner. Work indicates that certain known medicinal constituents from the havan samagri can thus be added to the burning farm material while disposing unwanted agriculture material, in order to reduce plant pathogenic organisms. In particular, it highlights the fact we must think well beyond the physical aspects of smoke on plants in natural habitats and impact heavily on our

understanding of fire as a driving force in evolution. We have demonstrated that using medicinal smoke it is possible to contain diverse pathogenic bacteria of the air we breathe. The work also highlights the fact about medicinal smoke and that a lot of natural products have potential for use as medicine in the smoke form as a form of drug delivery and as promising source of new active natural ingredients for containing indoor airborne infections within confined spaces used for storage of agriculture commodities. The dynamic atmospheres are much more complex than has been previously realized. The findings warrant a need for further evaluation of various ingredients present in the complex mixture of odoriferous and medicinal herbs, individually and in various combinations to identify the active principles involved in the bactericidal property of the medicinal smoke, applied in the above discussed fashion.

Motivational Quotes:

- Pray, not to ask God for what you need, but to thank God for what you have, For he knows what you need and when you need it.
- Believe in yourself and you will be unstoppable.
- You are the artist of your own life. Don't hand the paintbrush to anyone else.
- One small positive thought in the morning can change your whole day.

योगी राज के गुण गायेँ, जन्माष्टमी मनायेँ

□ सावित्री शर्मा

जन्माष्टमी मनायेँ उस महान की,
श्री कृष्ण गीता वाले भगवान की।

अन्तरा:

जो चारों वेदों का ज्ञाता, नीति निपुण प्रख्याता।
गुरु सन्दीपन का चेला, सच्चा मित्र अलबेला।
प्रीति अजब निराली, दयावान की।
श्री कृष्ण गीता वाले भगवान् की।

इक अनोखी घड़ी आई, छिड़ी धर्म की लड़ाई,
मन में दुविधा समाई, दशा वरणीन जाई नीतिवान की।
श्री कृष्ण गीता वाले भगवान् की।

कुरुक्षेत्र का मैदान, बना अर्जुन नादान, दिया गीता का ज्ञान,
निज कर्तव्य को पहचान, तुझमें ज्योति है, प्रभु के वरदान की।
श्री कृष्ण गीता वाले भगवान् की।

सुख दुःख का जो मेल, सारा कर्मों का खेल जैसा कर्म तू करेगा।
फल वैसा ही भरेगा, यही विधि है विधाता के विधान की।
श्री कृष्ण गीता वाले भगवान् की।

जिसका शोक तू करे, वह तो मारे न मरे, नहीं शस्त्रों स कटे।
न जले, न गले, न सूखे न फटे, होती आत्म अमर प्राणवान की।
श्री कृष्ण गीता वाले भगवान् की।

मन के संशय मिटाकर, प्यारे प्रभु की शरण में आकर।
धनुष बाण तुम उठाओ, क्षत्रिय धर्म को निभाओ।
चिन्ता त्याग दे, अब मान और सम्मान की।
जन्माष्टमी मनायेँ उस महान् की।

- आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर



आर्य समाज राजेन्द्र नगर द्वारा
महामारी के दौरान विशिष्ट योगदान

कोरोना आपदा ने एक सबक सभी को सिखाया है कि आपदा कभी सूचना देकर नहीं आती और जब आफत बहुतों को एक साथ आए तो समस्या का सबसे आसान हल ढूँढना चाहिए। इस संक्रमण काल में जब सरकार ने भी अपने हाथ खड़े कर दिये तब बहुत सारे लोग इस महामारी से लड़ने के लिए आगे आए बहुत सारी संस्थाएं भी आगे आईं जिनमें से एक संस्था आर्य समाज राजेन्द्र नगर भी है इस समय में जब कोरोना जान ले रहा और महंगाई जीने नहीं दे रही तब आर्य समाज राजेन्द्र नगर ने बहुत प्रकार से अपना योगदान दिया। कोरोना काल में जब व्यक्ति ऑक्सीजन कंशरटेंट के लिए भटक रहा था और सरकार भी इसकी पूर्ति नहीं नहीं कर पा रही थी तब आर्य समाज ने आगे आकर इसका सहयोग दिया और समाज को एक विचार दिया की हमें मिलकर ही इस महामारी से लड़ना है इसके बाद आर्य समाज ने उन सभी वर्गों पर भी ध्यान दिया जिनका रोजगार इस महामारी के दौरान छिन गया। इन सभी व्यक्तियों के लिए समाज ने एक समय का भोजन कराने की जिम्मेदारी उठाई और सभी को यह विश्वास दिलाया की हम हर मुश्किल में साथ रहेगें। इस प्रकार समाज ने बहुत बड़ा योगदान दिया।

तुलसी के गुण

□ मोहित आर्य

□ घर में तुलसी का पौधा सौभाग्य को बढ़ाता है। □ तुलसी की माला पहनने से शरीर नीरोग रहता है। □ तुलसी की चाय पीने से ज्वर, शूल, श्वास व कुष्ठ रोग दूर होते हैं। □ तुलसी की गंध हवा को स्वच्छ करती है। □ तुलसी के निरन्तर प्रयोग से कैंसर की बीमारी नहीं आती। □ तुलसी गले के लिए अति उत्तम है। उसके पत्ते केवल मुंह में रख लें और रस लें। □ जुकाम में तुलसी लाभदायक है। □ तुलसी खून को साफ करती है। □ तुलसी को कभी चबाना नहीं चाहिए। □ तुलसी का इस शरीर पर मलेन से मिर्गी रोग ठीक होता है। □ तुलसी रस में सम मात्रा में नींबू रस मिलाकर लगायें, तो मुंहासे ठीक हो जाते हैं। □ तुलसी के पौधे के पास खड़े होकर दस मिनट तक गहरा सांस लें।

- आर्य समाज नगला गहराना एटा

वन्दे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्
शुभ्र ज्योत्सना-पुलकित यामिनीम्
फुल्लु कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्।

R.N.I.No. DEL BIL/2007/22120
Date of Publication 01-08-2021

Delhi Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posting Date: 7-8 Every Month

सेवा में,



आर्य प्रेरणा

अगस्त-2021

ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060

वेद प्रचार, श्रावणी पर्व एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह

रविवार 22 अगस्त से रविवार 29 अगस्त (जन्माष्टमी), 2021 तक सभी धर्मप्रेमी भाइयों/बहनों से निवेदन है कि आप अपने सभी इष्ट मित्रों सहित सामवेदीय बृहद यज्ञ तथा वैदिक सत्संग के पूरे कार्यक्रम में भाग लेकर अपना जीवन सफल बनायें तथा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

सामवेदीय बृहद महायज्ञ

रविवार 22 अगस्त से रविवार 29 अगस्त, 2021 तक

ब्रह्मा: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,

वेदपाठ: आर्य समाज के ब्रह्मचारी,

प्रतिदिन प्रातः 7:30 से 8:15 तक बृहद यज्ञ

11 कुम्भ मेष महायज्ञ

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह रविवार 29 अगस्त 2021

प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति- 7:45 से 9:00 तक,

ध्वजारोहण- 9:00 से 9:15 तक,

प्रसाद वितरण- 9:15 से 9:45 तक,

भजन: ब्रह्मचारीगण प्रातः 9:45 से 10:00 तक

10:00 से 12:00 बजे तक विशेष कार्यक्रम

अध्यक्ष: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

मुख्य अतिथि: श्री एस.के. अजमानी जी

मुख्य वक्ता: डॉ. महेश विद्यालंकार जी

विशिष्ट अतिथि: श्री संदीप नरूला जी

छात्रवृत्ति वितरण, शान्ति पाठ, प्रसाद वितरण

अशोक सहगल (प्रधान), नरेन्द्र मोहन वलेचा (मन्त्री), आर्य समाज राजेन्द्र नगर, सावित्री शर्मा (प्रधाना), ललिता कुमार (मन्त्राणी) स्त्री आर्य समाज राजेन्द्र नगर, अमृत आर्या (प्रधाना) आर्य स्त्री समाज बहावलपुर,

आदर्श सहगल (प्रधाना), जगदीश वधवा (मन्त्राणी), आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर

सामवेद

अथर्ववेद

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printer, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. Editor: Acharya Gavendra Shastri